3

ज्योतिषियों का आना

(2:1-12)

मत्ती 2 अध्याय पाठक को यीशु के आरम्भिक वर्षों का कुछ संक्षिप्त विवरण देता है। परन्तु सुसमाचार के लूका के वृत्तांत के विपरीत (2:1-38), मत्ती यूसुफ़ और मरियम के पहले नासरत में रहने, बैतलहम में यीशु के जन्म की परिस्थितियों, चरवाहों के आने, यीशु के खतने या परिवार के यरूशलेम के मन्दिर में जाने के बारे में कुछ नहीं कहता। मत्ती 2 में वर्णित ज्योतिषियों का आना उन घटनाओं के बाद हुआ होगा।

इस अध्याय में कई मुख्य विषय मिलते हैं। बालक यीशु को यहूदियों के वास्तविक राजा के रूप में दिखाया गया है जो दण्डवत किए जाने के योग्य है। वह क्रूर राजा हेरोदेस के ऊपर ठहराया गया है, जिसकी मसीहा को नष्ट करने की दुष्ट योजना को ईश्वरीय हस्तक्षेप से निष्फल कर दिया गया। स्वर्गदूत के दर्शन के द्वारा चेतावनियों से परमेश्वर यह सुनिश्चित करता है कि उसका पुत्र सुरक्षित रहे। यीशु के जन्म स्थान बैतलहम से उसके गृहनगर नासरत में जाने की एक महत्वपूर्ण व्याख्या भी है।[1] स्थानों के ये नाम अध्याय के लिए पुस्तकाश्रयों का काम करते हैं (1:1, 23)। यीशु के जीवन की घटनाओं को भविष्यवाणी के पूरा होने के रूप में देखा जाता है।

यरूशलेम में ज्योतिषियों का आना (2:1, 2)

[1]हेरोदेस राजा के दिनों में जब यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ, तो पूर्व से कई ज्योतिषी यरूशलेम में आकर पूछने लगे, [2]कि यहूदियों का राजा, जिसका जन्म हुआ है, कहां है? क्योंकि, हम ने पूर्व में उसका तारा देखा है और उस को प्रणाम करने आए हैं।

आयत 1. पिछली आयत मत्ती 1:25 संक्षेप में बताती है कि मरियम ने ''एक पुत्र को जना।'' अध्याय 2 के आरम्भ में मत्ती ने जोड़ा कि **यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ**। लूका ने विस्तार से बताया है कि यूसुफ और मरियम वहां क्यों थे। ''क्विरिनियुस सीरिया का हाकिम था'' जब अगस्तुस कैसर ने जनगणना का आदेश दिया था। यूसुफ बैतलहम का रहने वाला था इस कारण उसे जनगणना में नाम लिखवाने के लिए इस नगर में लौटना आवश्यक था (लूका 2:1-5)। बैतलहम यरूशलेम से दक्षिण की ओर लगभग छह मील दूर एक छोटा सा नगर है। इसे ज़बलून के इलाके में स्थित इसी नाम वाले एक और नगर से अलग करने के लिए ''यहूदिया का बैतलहम'' कहा जाता है (यहोशू 19:15, 16)। ''यहूदिया'' नाम शायद यहूदा की शाही गोत्र पर ज़ोर देने के लिए इस्तेमाल किया जाता है (उत्पत्ति 49:10)।

''बैतलहम'' का अर्थ है ''रोटी का घर,'' जो उस इलाके में भूमि के उपजाऊ होने के कारण रखा गया हो सकता है। 1500 ई.पू. पुरानी समृद्ध विरासत वाला नगर बैतलहम राजा दाऊद का

जन्म स्थान था (1 शमूएल 17:12-15)। इसी स्थान के निकट अपने छोटे बेटे बिन्यामीन को जन्म देने के समय राहेल की मृत्यु हो गई थी (उत्पत्ति 35:16-20; 48:7)। बैतलहम वह स्थान भी था जहां बोअज़ रूत नाम की एक मुआबिन स्त्री से मिला था जिससे बाद में उसने विवाह कर लिया (रूत 1:1, 22; 2:4; 4:13)। सुलैमान के पुत्र रहूबियाम ने अपने शासन के दौरान इस नगर की किलाबन्दी कर दी (2 इतिहास 11:6)। कुछ यहूदी लोग बाबुल के निर्वासन से वहीं पर लौटे थे (एज्रा 2:21; नहेम्याह 7:26)।

325 में सम्राट कौंस्टेंटाइन ने यहां एक गुफ़ा के ऊपर गिरजाघर बनवाया, जिसे उसकी माता, रानी हेलेना मसीह का जन्म-स्थान मानती थी।[2] (पुराने ज़माने में गुफ़ाओं का इस्तेमाल अस्तबलों के रूप में किया जाता था।) यह परम्परा जस्टिन मार्टिर के ज़माने की है (लगभग 100-लगभग 165)।[3] यह मानते हुए कि यह केवल एक परम्परा है, जैक पी. लूईस ने इस गुफ़ा को ''उसके जन्म का वर्तमान मन्दिर, अधिक प्रामाणिक पवित्र स्थानों में से एक'' कहा।[4] परन्तु पहचान पक्की नहीं है।

मसीह का जन्म **हेरोदेस** महान के शासनकाल में हुआ। हेरोदेस अन्तिपतरस नामक एक एदोमी का बेटा था जिसे जूलियस सीजर ने यहूदिया का हाकिम ठहराया था। उसकी मां सिप्रोस फलस्तीन के दक्षिण पूर्व राज्य से एक नाबाती अरबी थी। अन्तिपतरस ने 47 ई.पू. में गलील के पूर्ण या चौथाई हाकिम के रूप में हेरोदेस को नियुक्त करने के लिए कैसर पर प्रभाव डाला। पारथियों के फलस्तीन पर हमला करने के समय हेरोदेस मिस्र में भाग गया। बाद में वह रोम में चला गया जहां मार्क एंटनी के प्रभाव के द्वारा 40 ई.पू. में उसे यहूदियों का **राजा** घोषित कर दिया गया। रोमी सरकार की सहायता से उसने फलस्तीन पर हमला किया। युद्ध के कुछ सालों बाद उसने 37 ई.पू. में पारथियों को निकालकर अपना राज्य स्थापित कर लिया। उसी साल अगस्तुस कैसर ने फलस्तीन के लगभग सभी भागों को घेरते हुए हेरोदेस के इलाके को बढ़ा दिया।[5] उसका शासन जो 37 ई.पू. से लगभग 4 ई.पू. तक चला, भवन निर्माण के बड़े कार्यक्रमों, राजनैतिक षड्यन्त्रों, हत्याओं और क्रूरता के कारण प्रसिद्ध है। यह समझना आसान है कि यह सनकी सम्राट अपने सिंहासन के लिए किसी भी सम्भावित प्रतिद्वंद्वी से क्यों डरता होगा और उसने किसी भी प्रकार की प्रतिस्पर्धा को होने से रोकने के लिए कठोर प्रबन्ध क्यों किए। आर. वी. जी. टास्कर ने पण्डितों के आने पर राजा हेरोदेस की प्रतिक्रिया लिखी है, ''जिससे वह बड़ा परेशान हुआ होगा, क्योंकि धैर्य के साथ उस बदमिज़ाज तानाशाह के ध्यान में संसार की अन्तिम बात यहूदियों में प्रतिस्पर्धी राजा का होना ही था।''[6]

बालक यीशु को दण्डवत करने के लिए **पूर्व से** आए **ज्योतिषियों** के इर्द-गिर्द कई सवाल घूमते हैं। क्या वे ''पण्डित यानी बुद्धिमान लोग,'' ''ज्योतिषी,'' ''जादूगर'' थे या ''राजा''? क्या वे यहूदी थे या अन्यजाति? वे कितने लोग थे? विशेषकर वे किस इलाके से आए थे? मसीह की अपनी खोज में वे यरूशलेम में कब पहुंचे थे?

उनकी पहचान। अंग्रेज़ी शब्द ''magi'' यूनानी भाषा के शब्द का लिप्यंतरण है, जिसका अनुवाद ''पण्डित'' (KJV), ''ज्योतिषी'' (NEB) हिन्दी और ''तारों का अध्ययन करने वाले लोग'' (TEV) हुआ है। यूनानी शब्द के सम्बन्ध में, लियोन मौरिस ने लिखा है:

> [*Magos*] का अर्थ मूल में मेगोई के गोत्र का सदस्य लगता है; बाद में इसका इस्तेमाल जादू करने वालों की पवित्र जाति के सदस्य के लिए होने लगा और फिर इसका इस्तेमाल सामान्य अर्थ में टोनों के लिए होने लगा (प्रेरितों 13:6, 8)। हमें यह शब्द ''मैजिक'' (जादू) से मिला है।[7]

यीशु के दर्शन को आए ज्योतिषियों के लिए मेगाई शब्द मादी लोगों में पुरोहितों की जाति (याजकीय वर्ग) के हो सकते हैं, परन्तु ''*magi*'' शब्द अन्य पूर्वी फिलॉस्फियों के लिए भी इस्तेमाल होने लगा। मेगाई को खगोल विद्या, ज्योतिष और मुहूर्त निकालने के साथ भी जोड़ा गया है। हेरोदोतस ने उन ज्योतिषियों को मादियों के गोत्र में से एक बताया, परन्तु फारसी संस्कारों के सम्बन्ध में भी उनका उल्लेख किया।[8] ऐसा समुदाय था और उसने भावी ''पण्डितों'' को प्रभावित किया था या नहीं हमारे पास अन्तिम रूप में यह साबित करने का कोई तरीका नहीं है कि मत्ती द्वारा बताए गए ये लोग वास्तव में कौन थे।

परन्तु यह कहना सुरक्षित है कि ये ज्योतिषी राजा नहीं थे। हेरोदोतस के अनुसार, जादूगरों के एक कबीले ने फारसियों को खत्म करने की कोशिश की[9]; परन्तु उनकी कोशिश नाकाम रहने पर उन्होंने किसी प्रकार की राजनैतिक महत्वाकांक्षा रखनी बन्द कर दी। वे फारसी राजाओं के आध्यात्मिक अगुवे और सलाहकार बन गए। यह विचार कि वे राजा थे टर्टुनियन जितना ही पुराना है (दूसरी शताब्दी का अन्तिम भाग)[10] जो बाइबल के कुछ हवालों को गलत समझने के कारण है (जैसे यशायाह 60:3-11; भजन संहिता 68:29; 72:10, 11, 15; प्रकाशितवाक्य 21:24)। बड़े दिन के एक प्रसिद्ध गीत की पंक्ति के सम्बन्ध में, विलियम हैंड्रिक्सन ने टिप्पणी की है, '' 'हम तीन राजा मशरिक के हैं' बड़े दिन की परम्परागत कहानियों के उसी विशाल संग्रह से सम्बन्धित है जिसमें 'छोटा यीशु ख़ुदावंद कभी रोता न था' भी है।''[11]

उनका मूल। इन लोगों के आने का स्थान उतना ही रहस्यपूर्ण है जितना यह कि वे कौन थे। ''पूर्व से'' का वाक्यांश उपसर्गीय वाक्यांश अनिश्चित है। यूनानी शब्द और अधिक अक्षरश: अनुवाद किया जा सकता है ''सूर्योदय के स्थान से'' जिसका अर्थ एशिया की ओर से हो सकता है। एच. लियो बोल्स ने लिखा है कि '' 'पूर्व' का अर्थ या तो अरब, फारस, कसदिया या पारथिया या फलस्तीन के आस-पास के इलाके हो सकते हैं।''[12] कलीसिया के कम से कम आरम्भिक लेखक जस्टिन मार्टिर (लगभग 100-लगभग 165) ने दावा किया कि ये ज्योतिषी अर्थात पण्डित लोग अरब से आए थे।[13] सिकन्द्रिया के क्लेमेंट (लगभग 150-लगभग 215) और क्रिसोस्टोम (लगभग 347-407) जैसे कई अन्य लोगों ने कहा कि वे फारस से आए थे।[14]

उनकी जातीय पहचान। इन ज्योतिषियों को परम्परागत रूप में अन्यजातियों से होना माना जाता है।[15] डग्लस आर. ए. हेयर ने लिखा, ''जहां तक उनके उद्‌गम और व्यवसाय की बात है, उनके प्रश्न से सुझाव मिलता है कि वे अन्यजाति लोग थे, जिन्हें बताया गया होगा कि दाऊद के नगर में दाऊद का बड़ा उत्तराधिकारी जन्म लेने वाला है।''[16] यदि ऐसा है तो मत्ती ने सब जातियों के लिए मसीह के मिशन के विषय को बढ़ाने के लिए इस कहानी का इस्तेमाल किया हो सकता है (1:3 पर टिप्पणियां देखें)।

तौभी यह पक्का नहीं है कि दर्शन के लिए आने वाले ये लोग अन्यजाति ही थे। ''ज्योतिषी''

के लिए अंग्रेज़ी शब्द मेगाई चाहे बाद के समयों में जादू और छलने के साथ जुड़ गया, पर इसका इस्तेमाल विभिन्न राजाओं के सलाहकारों के रूप में काम करने वालों का वर्णन करने के लिए किया जाता था। यहूदी बंदी, दानिय्येल बाबुल में ऐसे ही प्रतिष्ठित लोगों में से था (देखें दानिय्येल 2:1–12, 27, 48, 49; LXX)। यह तथ्य कि ये ज्योतिषी पूर्व से आए थे इस बात को साबित नहीं करता कि वे अन्यजाति थे, क्योंकि आठवीं से छठी शताब्दी ई.पू. में यहूदी लोग बाहर के देशों में फैले हुए थे। कइयों को ''मादियों के नगरों'' अश्शूर और बाबुल में ले जाया गया था (2 राजाओं 17:6; 24:15; एस्तेर 1:1; 9:2)। पिन्तेकुस्त वाले दिन उपस्थित लोगों में कुछ लोग जो स्पष्टतया यहूदी थे (प्रेरितों 2:5) ''पारथी और मादी और एलामी लोग और मिसुपुतामिया'' के रहने वाले थे (प्रेरितों 2:9)। इन सब इलाकों को पूर्वी इलाके कहा जा सकता है।

उनकी संख्या। उन ज्योतिषियों की पूरी-पूरी संख्या क्या थी? तीन उपहारों (2:11) से यह विश्वास बन गया है कि वे केवल तीन लोग थे।[17] यहां तक कि उन्हें तीन नाम तक दे दिए गए थे–मेल्किओर, बल्तशर, और गास्पर–जो केवल छठी शताब्दी की यूनानी पुस्तक में ही मिल सकते हैं।[18] उन पण्डितों की गिनती का कोई महत्व नहीं है, बल्कि उस कारण का महत्व है जिसके लिए वे आए। वे नये राजा को दण्डवत करने आए थे।

उनका आना। फलस्तीन में आने पर वे ज्योतिषियों **यरूशलेम** में गए। डोनल्ड एच. हैग्नर ने टिप्पणी की है:

> स्पष्टतया प्रधान याजकों और ग्रन्थियों द्वारा उद्धृत किए गए मीका के पद से अपरिचित उन ज्योतिषियों की स्वाभाविक मान्यता थी कि नया राजा राजधानी नगर में ही पैदा होगा। इस कारण वे ''यरूशलेम में'' ... जाते हैं। उनके इरादे का पता चलने के बाद (आयत 7) वे हेरोदेस के पास नहीं जाते बल्कि वह उन्हें बुलाता है (आयत 3)।[19]

ज्योतिषी बैतलहम में कब पहुंचे? आमतौर पर हम चरनी में बालक यीशु के लेटे होने और उसके माता-पिता के उसे बड़े प्रेम से सम्भालते हुए एक दृश्य को देखते हैं। उसकी ओर ताकने वाले पशु, चरवाहे और ''तीन ज्योतिषी'' हैं। ऐसा नहीं था। बैतलहम में यीशु के जन्म के समय के कई महीने, शायद साल या इससे भी अधिक देर बाद (लूका 2:1–20) वे ज्योतिषी आते हैं। मत्ती लिखता है कि ज्योतिषियों को उसके मिलने के समय यह परिवार ''एक घर'' में रह रहा था (2:11)।

आयत 2. यरूशलेम में पहुंचते ही ज्योतिषी यीशु के विषय में पूछने लगे। वे पूछ रहे थे, **''यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ है, कहां है?''** 2:1 के अन्त में ''पूछने लगे'' शब्द वर्तमान कृदन्त है जो निरन्तर क्रिया का सुझाव देता है। उन्होंने एक ही बार नहीं पूछा बल्कि यह प्रश्न उन्होंने कई बार पूछा। उन्हें कैसे पता था कि यही प्रश्न पूछना है? स्पष्टतया उन्हें तारे की भविष्यवाणी का ज्ञान था (गिनती 24:17) पर मसीहा के जन्म के स्थान की भविष्यवाणी की जानकारी नहीं थी (मीका 5:2)। आरम्भिक रोमी लेखकों का ऐतिहासिक प्रमाण उस समय की अपेक्षा की पुष्टि करता है कि एक यहूदी हाकिम शीघ्र ही आने वाला था। इस भविष्यवाणी की पूर्व सूचना में एक महान राजा के वैश्विक शासन का संकेत था।[20] लुईस ने लिखा है, '' 'यहूदियों के राजा के जन्म' का पण्डितों का प्रश्न (तुलना 27:11) हेरोदेस से भिन्नता का सुझाव देता

है, जिसने विरोधियों के खात्मे के लिए बलपूर्वक, चतुराई से और तलवार के बल से महल पर कब्जा किया था।''[21]

इस नये जन्मे राजा के स्थान के बारे में पूछते हुए ये ज्योतिषी बता रहे थे, ''**क्योंकि हम ने पूर्व में उसका तारा देखा है**।'' कुछ अनुवादों में ''पूर्व में'' के बजाय ''चढ़ते हुए'' या कुछ ऐसे किया गया है। डब्ल्यू. एफ़. अल्ब्राइट और सी. एस. मन के अनुसार, ''जो हमें लगता है वह ज्योतिषियों द्वारा देखी गई घटना के आरम्भ की बात करते हुए एक तकनीकी अभिव्यक्ति है। ... पूर्व-मसीही साहित्य में यूनानी शब्द [*anatolē*] का अर्थ सूर्य और अन्य तारों के उदय होने के सम्बन्ध में है।''[22] हैग्नर ने ध्यान दिलाया, ''आमतौर पर माना जाता था कि महापुरुषों के जन्म (और मृत्यु) का संदेश किसी तारे के दिखाई देने या किसी ऐसी ही आकाशीय घटना से दिया जाता था। ... मेल खाती बातों ... से पता चलता है कि मत्ती का विवरण उसके समय के लिए उतना बाहरी नहीं था, जितना हमारे समय के लिए है।''[23]

मत्ती द्वारा चाहे गिनती 24:17 से उद्धृत नहीं किया गया, पर ज्यातिषियों द्वारा देखा गया ''तारा'' आम तौर पर उस वचन में बिलाम की भविष्यवाणी का पूरा होना माना जाता है: ''याकूब में से एक तारा उदय होगा, और इस्राएल में से एक राजदण्ड उठेगा।'' यहूदियों[24] और मसीही लोगों द्वारा इसकी व्याख्या मसीहा की भविष्यवाणी समान रूप में की गई है।[25] ज्योतिषियों को गिनती 24:17 में वर्णित पुराने नियम के तारे की भविष्यवाणी का कैसे पता चला? वास्तव में वे मसीहा की प्रतीक्षा करते हुए क्यों लगे? इसके अलावा वे नये जन्मे राजा को ''दण्डवत'' करने के लिए इतनी दूर से क्यों आए? क्या वे यहूदी मत धारण करने वाले थे? क्या वे अन्यजाति विश्वासियों के उस समूह में से थे जिसे ''परमेश्वर का भय मानने वाले'' के रूप में जाना जाता था? क्या हम पूरी तरह से इस सम्भावना को नकार सकते हैं कि वे यहूदी थे जिन्होंने दानिय्येल सरीखी भूमिकाएं निभाईं? इन प्रश्नों का उत्तर शायद कभी न मिले। बाइबल के भीतरी प्रमाण के निश्चित न होने पर बाहरी प्रमाण पर आधारित निष्कर्ष निकालना खतरनाक है।

हम दिखाई देने वाले उस तारे की व्याख्या कैसे करेंगे? जोहन्नस केप्लर नामक एक प्रसिद्ध खगोलशास्त्री (1571-1630) ने 1603 और 1604 में शनि और बृहस्पति ग्रहों को मिलते देखा और उसके एक साल बाद मंगल को। यह घटना आठ सौ साल में केवल एक बार घटती है। केप्लर ने लिखा कि यह होने पर बृहस्पति और शनि के बीच एक चमकीला तारा दिखाई दिया था। उसने उससे जो उसे पता चला था एक थ्योरी बनाई कि यही बात मसीह के जन्म के समय के निकट हुई और उन पण्डितों ने यही तारा देखा था।

कार्ल विस्लर नामक एक और खगोलशास्त्री (1813-1883) ने तर्क दिया कि चीनी लोगों की खगोलीय तालिकाओं में वास्तव में मसीह के जन्म के समय के आस पास एक नये तारे के दिखाई देने की बात है। और अधिक हाल ही में कोलिन हम्फ्रेस ने भी चीनी दस्तावेजों में से तर्क दिया है कि 5 ई.पू. में एक धूमकेतु दिखाई दिया जो सत्तर दिन तक दिखाई देता रहा, जो ज्योतिषियों के पूर्व से बैतलहम को जाने का तर्कसंगत समय है।[26]

ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हेली वाला धूमकेतु लगभग 11 ई.पू. में दिखाई दिया और पूरे आकाश में दिखाई दिया होगा था। अन्य इस विचार को लेते हैं कि एक उल्का उस घर के ऊपर विश्राम के लिए ठहर गया जहां ज्योतिषियों को यीशु मिला था। विलियम बार्कले ने लिखा है

''एक असामान्य आकाशीय घटना'' जो 5 से 2 ई.पू. में घटी। ''मिसोरी'' नामक जिसका अर्थ ''राजकुमार का जन्म'' है मिसरियों के महीने के पहले दिन, लुब्धक ध्रुव तारा ''सूर्य के निकट अर्थात सूर्योदय के समय निकला और असाधारण चमक के साथ चमका।''[27] जॉन मेकार्थर, जूनि., का अनुमान था कि ''यह प्रभु का तेज हो सकता है—वही तेज जो स्वर्गदूत द्वारा चरवाहों पर यीशु के जन्म की घोषणा किए जाने के आस-पास चमका था (लूका 2:9),'' परन्तु उसने जोड़ा कि ''बाइबल तारे की पहचान नहीं कराती या उसकी व्याख्या नहीं करती इसलिए हम हठधर्मी नहीं हो सकते।''[28]

पूर्व से आने वाले पण्डितों का उद्देश्य मसीह को **प्रणाम** करना था। ''प्रणाम'' के लिए यूनानी शब्द (*proskuneō*) मत्ती में तेरह बार आता है (2:2, 8, 11; 4:9, 10; 8:2; 9:18; 14:33; 15:25; 18:26; 20:20; 28:9, 17)। ''चुम्बन'' और ''के प्रति'' अर्थ वाले शब्दों से लिया होने के कारण *proskuneō* शब्द ''किसी के लोगों के सामने झुककर उनके पांव या उनके वस्त्र की छोर, भूमि आदि को चूमने की प्रथा'' का संकेत है। इसका अर्थ किसी के सामने ''सम्मान, श्रद्धा, भक्ति करना है।''[29] इसका अर्थ आवश्यक नहीं कि यह धार्मिक पूजा या उपासना हो। यह तथ्य कि ज्योतिषी एक राजा की तलाश में आए थे इस बात का संकेत है कि वे राजनैतिक आदर देना चाहते थे। परन्तु इस बच्चे की पहचान के प्रति उनकी जागरूकता के कारण हम आत्मिक उपासना की बात को नकार नहीं सकते। वचन इस विचार का समर्थन करता हुआ प्रतीत होता है।

हेरोदेस का धार्मिक अगुओं को बुलाना (2:3-6)

[3]यह सुनकर, हेरोदेस राजा और उसके साथ सारा यरूशलेम घबरा गया। [4]तब उसने लोगों के सब महायाजकों और शास्त्रियों को इकट्ठे करके उन से पूछा, मसीह का जन्म कहां होना चाहिए? [5]उन्होंने उससे कहा, यहूदिया के बैतलहम में। क्योंकि, भविष्यवक्ता के द्वारा यों लिखा गया है,

[6]''हे बैतलहम, जो यहूदा के देश में है,
तू किसी रीति से, यहूदा के अधिकारियों में सबसे छोटा नहीं।
क्योंकि तुझ में से एक अधिपति निकलेगा,
जो मेरी प्रजा इस्राएल की रखवाली करेगा।''

आयत 3. हेरोदेस ज्योतिषियों के मुंह से ''यहूदियों का राजा'' शब्द सुनकर **घबरा गया**। उससे यह समझना कठिन नहीं है कि वह क्यों डरा होगा। उसने सत्ता अपने पास रखी थी और अपने राज्य में शान्ति केवल कठोरतम ढंगों से बनाकर रखी थी। उसके कई शत्रु थे, विशेषकर यहूदियों में जिनके ऊपर वह राज करता था। किसी सम्भावी विरोधी प्रतिस्पर्धी का विचार भी उसकी ईर्ष्या और भय को बढ़ा देता था।

सुझाव दिया गया है कि हेरोदेस के साथ उनकी मित्रता **उसके साथ सारा यरूशलेम** होगा ''घबरा गया।'' यह सच है कि यरूशलेम के कुछ लोग प्रबन्धन में परिवर्तन के पक्ष में नहीं होंगे पर अधिकतर लोग अन्त में इसके बदलने की उम्मीद लगाए बैठे थे। लोगों के बीच में यह चिन्ता

उनकी परेशानी या भय के कारण होगा कि यहूदी राजा की खबर सुनकर हेरोदेस क्या प्रतिक्रिया देगा। उन्होंने पहले उसकी नृशंसता की कई घटनाएं देखी थीं और यदि हेरोदेस को यकीन हो जाए कि उसके शासन को खतरा है तो उनका भय उचित था। मेकार्थर ने लिखा है:

> यह अधिक सम्भावना है ... कि लोगों की चिंता सीधे तौर पर ज्योतिषियों की नहीं बल्कि उन पर हेरोदेस की प्रतिक्रिया थी। हेरोदेस के विरोध के कड़वे अनुभव का अर्थ उन्हें मालूम था कि आम तौर पर वहशी कत्लेआम था। उसे अपने शत्रुओं को ध्यान से पहचानने में कोई दिक्कत नहीं थी। उसे हानि पहुंचाने या उसकी गद्दी या सत्ता के लिए खतरे की भनक भी खतरा ही माना जाता था। अपने बड़े हत्याकांड में उसने आमतौर पर बिल्कुल निर्दोष कई लोगों को खत्म किया था। अपनी स्वयं की सुरक्षा का भय लोगों में घर कर गया था।[30]

मौरिस ने कहा है, ''जब हेरोदेस महान कांपा तो सारा नगर कांप गया।''[31]

आयत 4. हेरोदेस चाहे धार्मिक व्यक्ति नहीं था पर यहूदी धर्मशास्त्र और परम्पराओं से अच्छी तरह परिचित माना जाता था। मसीहा के आने से सम्बन्धित भविष्यवाणियों की जानकारी उसे थी। परन्तु स्पष्ट रूप में वह मीका की भविष्यवाणी से अपरिचित था (2:6)। उसे नहीं पता था कि **मसीहा का जन्म कहां होना चाहिए,** इस कारण उसने उन लोगों को यानी **प्रधान याजकों और शास्त्रियों को** बुलाया, जिन्हें उसके विचार से मालूम होना चाहिए था।

हेरोदेस द्वारा सलाह देने वाले वे लोग सम्भवतया यहूदी महासभा के सदस्य थे जिसे सन्हेद्रिन कहा जाता है। ''प्रधान याजक और शास्त्री'' उस सभा के धर्मशास्त्रीय भाग को देखते थे। हैग्नर ने तर्क दिया कि पूरी सन्हेद्रिन (महासभा) की सभा की बात यहां नहीं है क्योंकि इसमें ''प्राचीनों'' का उल्लेख नहीं है।[32]

''प्रधान याजकों'' में वर्तमान महायाजक, पूर्व महायाजकों और उनके परिवारों सहित जिनमें से महायाजक चुने जाते थे, लोग हो सकते हैं (देखें प्रेरितों 4:6)। लुईस ने विस्तार से बताया है:

> व्यवस्था के अनुसार अकेले व्यक्ति के पास होने के बावजूद यह पद पैतृक था और आजीवन था, पर हेरोदी राजकुमार और रोमी हाकिम अपनी सनक से महायाजकों को बनाते और उतार देते थे। नये नियम के काल में अठाइस महायाजकों का नाम देते हुए जोसेफ़स नये नियम की तरह ही बहुवचन शब्द *archiereis* का इस्तेमाल करता है।[33]

व्यवस्था के अनुसार याजकों के लिए केवल लेवी के गोत्र और केवल हारून की सन्तान में से होना आवश्यक है (निर्गमन 28:1; 29:9)। अन्य सभी लेवी याजकों के काम में सहायता के लिए सेवक होते थे, आज के डीकनों की तरह ही जिनका काम कलीसिया के ऐल्डरों की सहायता करना है। हारून की सन्तान के सबसे बड़े लड़के को उसका उत्तराधिकारी माना जाता था और यह प्रक्रिया युगों-युगों तक रहनी थी (निर्गमन 29:29, 30; गिनती 20:28; 25:11-13; व्यवस्थाविवरण 10:6)। मसीह के समय तक यह सब बदल चुका था। महायाजक का पद कम होकर रोमी और हेरोदी हाकिमों के नियन्त्रण में केवल एक राजनैतिक नियुक्ति रह गया था। स्पष्टतया यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय दो जन इस पद पर थे: हन्ना जिसे यहूदियों द्वारा

सही महायाजक माना जाता था और उसका दामाद कैफ़ा जिसे हन्ना के गद्दी से उतरने पर रोमियों द्वारा नियुक्त किया गया था (लूका 3:2; यूहन्ना 18:13, 14, 24, 28)।

जोयाकिम जिर्मियास ने ''प्रधान याजकों'' की पहचान की थोड़ी सी अलग व्याख्या दी है। प्रमाण की समीक्षा करने के बाद उसने निष्कर्ष निकाला:

> मन्दिर का प्रधान जो मन्दिर में आराधना करवाने और बाहरी प्रबन्धों के लिए जिम्मेदार था, महायाजक के बाद सबसे महत्वपूर्ण याजक था और प्रधान याजकों का मुखिया था। उसके बाद याजकों के साप्ताहिक कोर्स का अगुआ होता था, ड्यूटी पर जो भी कोर्स हो और इस सप्ताह के चार से नौ दैनिक कोर्स के अगुवे होते थे। ... प्रधान याजकों को जिन्हें मन्दिर में बनाई पक्की सभा में पक्के तौर पर लगाया जाता था जिसका अधिकार क्षेत्र याजकाई के ऊपर होता था और सभा में जिसके सदस्यों की सीटें और वोट होते थे।[34]

''शास्त्री'' अपने व्यवसाय के गुण से पुराने नियम के विद्वान होते थे। ये लोग यहूदी अदालतों के सरकारी दस्तावेज रखते थे और उनमें से कई दस्तावेज़ों को लिखते थे। इस काम के कारण उन्हें ''व्यवस्थापक'' भी कहा जाता था (22:35; लूका 5:17)। आराधनालयों के स्थापित होने पर (स्पष्टतया बाबुल की दासता के दौरान) पढ़े लिखे लोगों का एक वर्ग बन गया। उनका काम पवित्र शास्त्र को सम्भालना, उसकी प्रति बनाना और समझाना था। आम तौर पर उनका काम लिखने के सब कमरे में किया जाता था जिसमें एक पढ़ने वाला सामने होता और शास्त्री डेस्कों पर रहते और वचन के पढ़े जाने के समय उसकी नकल उतारते। इन प्रतिलिपियों को फिर आराधनालयों में विस्तृत किया जाता ताकि उनमें से प्रत्येक के पास पवित्र शास्त्र की पूरी नकल हो। शास्त्रियों को पवित्र शास्त्र के विद्वानों और शिक्षकों के रूप में पहचान मिलने के ढंग को समझना आसान था (23:2, 6-8)। हेरोदेस द्वारा जिन से सलाह ली गई थी वे यरूशलेम में रहते थे; उनमें से कुछ महासभा के सदस्यों के रूप में सेवा भी करते थे।

प्रधान याजकों और शास्त्रियों के एक अर्थ में हेरोदेस का सवाल था कि ''मसीहा का जन्म कहां होगा?'' यह उसके मसीहा की उम्मीद की समझ और पवित्र शास्त्र की उसकी अज्ञानता दोनों को दिखाता है (देखें यूहन्ना 7:25-27, 40-42)।

आयत 5. इन धार्मिक अगुओं को उत्तर देने के लिए ढूंढ़ने की आवश्यकता नहीं थी। उन्हें मालूम था और उन्होंने हेरोदेस को पवित्र शास्त्र से मेल खाता उत्तर दिया: मीका **भविष्यवक्ता** ने भविष्यवाणी की थी कि मसीहा का जन्म **यहूदिया के बैतलहम में** होगा। मीका की भविष्यवाणी को **क्योंकि यूं लिखा गया है** फार्मूले के द्वारा दिखाया गया है। ''लिखा है'' (*gegraptai*) मत्ती की पुस्तक में कई बार आता है और आम तौर पर पुराने नियम के किसी हवाले का परिचय देता है (2:5; 4:4, 6, 7, 10; 11:10; 21:13; 26:24, 31)।

आयत 6. मीका 5:2 मूल इब्रानी की नकल है जिसमें लिखा है:

> ''हे बैतलहम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है
> कि यहूदा के हजारों में गिना नहीं जाता,
> तौभी तुझ में से मेरे लिए एक पुरुष निकलेगा,
> जो इस्राएलियों में प्रभुता करने वाला होगा;

और उसका निकलना प्राचीनकाल से,
वरन अनादि काल से होता आया है।''

मत्ती का संस्करण इस प्रकार है:

'' 'हे बैतलहम, जो यहूदा के देश में है,
तू किसी रीति से, यहूदा के अधिकारियों में सबसे छोटा नहीं।
क्योंकि तुझ में से एक अधिपति निकलेगा,
जो मेरी प्रजा इस्राएल की रखवाली करेगा।' ''

''बैतलहम एप्राता'' को आधुनिक ''यहूदा देश के बैतलहम'' में और आधुनिक बनाया गया है। ''यहूदा के हज़ारों में'' अब ''यहूदा के अधिकारियों'' हो गया है। रॉबर्ट एच. गुंड्री ने सुझाव दिया है:

> इब्रानी व्यंजनीय वचन के लिए विभिन्न स्वरों को मिलाकर मत्ती ''हज़ारों'' के स्थान पर ''अधिकारियों'' पढ़ता है (MT, LXX)। इस प्रकार वह हज़ारों को इस प्रकार व्यक्तिगत बना देता है जैसे बैतलहम पहले ही व्यक्तिगत है (''हे बैतलहम, तू''), दाऊद के राजवंश में यीशु के अपने पूर्वाधिकारियों से श्रेष्ठ होने की पुष्टि करने के लिए (1:6-11)।[35]

इसके अलावा, ''जो मेरी प्रजा इस्राएल की रखवाली करेगा'' को शायद 2 शमूएल 5:2 से लिया गया है। यह वचन दाऊद से सम्बन्धित है और इसमें ''इस्राएलियों पर प्रभुता'' की बात भी करता है। (मीका 5:4 में भी रखवाली करने का विषय मिलता है।) अन्त में, मीका 5:2 का अन्तिम भाग मिटा दिया गया है।

इन रूपान्तरणों के सम्बन्ध में आर. टी. फ्रांस ने लिखा है, ''मत्ती खुले दिल से इस प्रकार से उद्धृत कर रहा है, जिससे शास्त्र की प्रासंगिकता की ओर ध्यान जाए।''[36] मसीहा ने ''प्रभुता करने वाला'' होना था जिसमें परमेश्वर के लोगों की ''रखवाली'' करनी थी। ''रखवाला'' शब्द राजा या हाकिम के लिए पुराने नियम में आम था (2 शमूएल 5:2-5; 7:4-7; यिर्मयाह 23:1-4; यहेजकेल 34:1-24)।

प्रधान याजक और शास्त्री चाहे इस भविष्यवाणी को जानते थे पर हमें नहीं मालूम कि उन्होंने स्वयं जाकर बालक को दण्डवत करने का कोई प्रयास किया हो। इस सम्बन्ध में बार्कले ने लिखा है कि उनकी प्रतिक्रिया ''पूरी तरह से उदासीनता'' वाली थी और आगे कहा कि ''मन्दिर के अपने संस्कार और अपनी कानूनी चर्चाओं में वे इतने तल्लीन थे कि उन्होंने यीशु को यूं ही पूरी तरह से नकार दिया।''[37]

ज्योतिषियों के साथ हेरोदेस की गुप्त सभाएं (2:7, 8)

[7]तब हेरोदेस ने ज्योतिषियों को चुपके से बुलाकर उन से पूछा, तारा ठीक किस समय दिखाई दिया था? [8]और उस ने यह कहकर उन्हें बैतलहम भेजा, कि जाकर उस बालक

के विषय में ठीक-ठीक मालूम करो और जब वह मिल जाए तो मुझे समाचार दो कि मैं भी आकर उस को प्रणाम करूं।

आयत 7. हेरोदेस ने **ज्योतिषियों** को बुलाया। इन लोगों को **चुपके से** बुलाने का उद्देश्य लोगों के बीच में और समझ बढ़ने से रोकना हो सकता है। वचन से कुछ और बुरा कारण मिल सकता है। वह अपनी असल मंशा को सामने नहीं आने देना चाहता था। ''चुपके से'' का अर्थ है कि बुलाया जाना और मुलाकात दोनों अकेले में हुए। वह ज्योतिषियों से वह जानकारी लेना चाहता था जो केवल उन्हें ही पता होनी थी: **तारा किस समय दिखाई दिया।** उसका उद्देश्य ठीक-ठीक पता लगाना था कि वह बच्चा कितना बड़ा था (2:16)।

''चुपके से'' के लिए यूनानी शब्द (*lathrai*) नये नियम में केवल चार बार आता है। अन्य स्थानों में वह मत्ती के पहले दो अध्यायों में मिलता है। शायद यहां धर्मी यूसुफ में थोड़ा सा अन्तर किया जा रहा है, जो मरियम को बदनामी से बचाने के लिए उसे ''चुपके से'' तलाक देना चाहता था (1:19) और दुष्ट हेरोदेस जिसने मसीह को खत्म करने के लिए ज्योतिषियों के साथ ''चुपके से'' मुलाकात की (2:7)।

आयत 8. मांगी गई जानकारी पा लेने के बाद हेरोदेस ने उन पण्डितों को **''बैतलहम भेज दिया।''** उसने उन्हें आदेश दिया कि **उस बालक** के मिल जाने पर वे वापस आकर उसे उसके बारे में बताएं ताकि वह भी जाकर **उसको प्रणाम** कर सके। जितना हम हेरोदेस के बारे में जानते हैं उससे हम उसके कपट और धोखेबाजी से चकित नहीं होते। मसीह को प्रणाम करने की उसकी कोई इच्छा नहीं थी; और उसका मकसद बिल्कुल साफ़ हो जाता है, क्योंकि पण्डित लोग यीशु की खबर लेकर उसके पास नहीं लौटे थे।

ज्योतिषियों को हेरोदेस के निर्देशों के सम्बन्ध में, फ्रांस ने ये महत्वपूर्ण अवलोकन किए:

> कई बार आरोप लगाया जाता है कि ऐतिहासिक हेरोदेस इतना धूर्त और निर्दयी था कि उसे सहयोग के लिए इन विदेशियों पर निर्भर होना पड़ा, और यह कि नहीं तो वह उनके साथ अपने सिपाही भेज देता। पर उसके पास शक करने का कोई कारण नहीं था कि वे उसके लिए आवश्यक जानकारी लेकर लौटेंगे और उनके साथ सिपाहियों के होने से बच्चे को ढूंढ़ने के उनके अवसर कम हो जाएंगे। जानकारी की इच्छा के लिए उसकी कपटपूर्ण मंशा ने शायद उसकी प्रजा को धोखा न दिया, पर विदेशियों के साथ काम करने की उम्मीद की जा सकती होगी।[38]

ज्योतिषियों का बैतलहम में पहुंचना (2:9-12)

[9]वे राजा की बात सुनकर चले गए, और देखो, जो तारा उन्होंने पूर्व में देखा था, वह उन के आगे-आगे चला, और जहां बालक था, उस जगह के ऊपर पहुंचकर ठहर गया। [10]उस तारे को देखकर वे अति आनन्दित हुए। [11]और उस घर में पहुंचकर उस बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा, और मुंह के बल गिरकर उसे प्रणाम किया; और अपना-अपना थैला खोलकर उसको सोना, और लोबान, और गन्धरस की भेंट चढ़ाई। [12]और स्वप्न में यह चेतावनी पाकर कि हेरोदेस के पास फिर न जाना, वे दूसरे मार्ग से होकर

अपने देश को चले गए।

आयत 9. यह आयत साबित करती है कि वह **तारा** जिसके पीछे-पीछे ज्योतिषी आए थे कोई आम तारा नहीं था। स्पष्टतया यह उन पण्डितों के यरूशलेम में रहने के समय या तो अदृश्य हो गया या खड़ा रहा। बैतलहम के लिए उनके निकलने पर उनका स्वर्गीय गाइड एक बार फिर चलने लग पड़ा, जब तक **जहां बालक था, उस जगह के ऊपर** पहुंचा। यह विलक्षण तारा पण्डितों को बैतलहम में बल्कि उस घर में ले गया। यह गतिविधि इस बात को साबित करती है कि यह जोहनस केप्लर और कार्ल वीसलर द्वारा काल्पनिक बात नहीं थी (2:2 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 10. उस तारे को देखकर वे अति आनन्दित हुए। ज्योतिषी उस ''तारे'' को जो उन्हें पूर्व से यहूदिया में लाया था देखकर ''आनन्दित'' हुए। यही तारा उन्हें बैतलहम अर्थात उनके लम्बे सफ़र की मंज़िल तक ले गया था, जहां उन्होंने बालक यीशु को देखना था। ''अति आनन्दित हुए'' वाक्यांश ज़ोर देकर ज्योतिषियों की प्रसन्नता और रोमांच को दिखाता है। आनन्द और स्तुति की ऐसी ही भाषा यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और यीशु के लूका के जन्म के विवरणों में मिलती है (लूका 1:14, 44, 46, 47; 2:10, 14, 20)।

आयत 11. ज्योतिषी **उस घर में** आए, जहां **मरियम** और **बालक** उस समय रह रहे थे। जैसा कि पहले कहा गया है कि ''चरनी'' का कोई उल्लेख नहीं है (लूका 2:7)। ज्योतिषियों का आना यीशु के जन्म के थोड़ी देर बाद हुआ (लूका 2:1-20)। उनका आना परिवार के मन्दिर में जाने के भी बाद हुआ (लूका 2:22-38) जो मरियम के शुद्धिकरण के चालीस दिनों के बाद हुआ था (लूका 2:22; देखें लैव्यव्यवस्था 12:1-4)। हैंड्रिक्सन ने ध्यान दिलाया है कि यदि ज्योतिषी मन्दिर में जाने से पूर्व आए थे, तो उनके कीमती उपहारों से उस निर्धन दम्पत्ति को ''पंडुकों का एक जोड़ा या कबूतर के दो बच्चे'' चढ़ाने से अधिक बलिदान करने के लिए होना था (लूका 2:23, 24; देखें लैव्यव्यवस्था 12:8)।[39] इसके अलावा लूईस ने लिखा है, ''मत्ती यह प्रभाव रहने देता है कि मिस्र में जाना पण्डितों या ज्योतिषियों के आने के तुरन्त बाद हुआ।''[40]

आकर पण्डितों ने बालक के सामने **मुंह के बल गिरकर उसे प्रणाम किया** (2:2 पर टिप्पणियां देखें)। यह ध्यान देना आवश्यक है कि उन्होंने ''उसे'' प्रणाम किया, उसके माता-पिता को नहीं। उनका कार्य इस मान्यता को नकारता हुआ लगता है कि ये लोग केवल जिज्ञासु अन्यजाति थे जो मसीह को ढूंढ़ने के लिए आए थे। यह इस विचार को समर्थन देता है कि या तो वे यहूदी, यहूदी मत धारण करने वाले या परमेश्वर का भय मानने वाले थे।

प्राचीन जगत में राजाओं को **भेंट** चढ़ाना आम बात थी। ऐसी भेंटें आम तौर पर एक पक्ष की अधीनता और बड़े पक्ष के प्रति वफ़ादारी का प्रतीक होती थी। इसलिए पण्डितों द्वारा लाए गए उपहार इस बात का संकेत हैं कि वे केवल दर्शक नहीं थे। थैले उपहार ले जाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले बर्तन शायद ''सन्दूक'' को कहा गया (NRSV; NLT)। यूनानी शब्द (*thēsauros*) ''शब्दों का भण्डार'' के अर्थ वाले अंग्रेज़ी शब्द ''thesaurus'' (समानांतर कोष) के पीछे है।

तीनों भेंटों में **सोना, और लोबान, और गंधरस** थे। सोना आम तौर पर राजाओं को

दिया जाने वाला उपहार था (1 राजाओं 10:2, 10; 2 इतिहास 9:20-24; यशायाह 60:9)। ''लोबान'' वह शब्द जिसका मूल अर्थ ''शुद्ध धूप'' है, दक्षिणी अरब की गंधक की चट्टानों में आम तौर पर होने वाले *बोसवेलिया प्रजाति के पेड़ की छाल का धूप या गोंद थी*। जलाने पर इसकी मीठी और सुगन्धित महक के कारण इसे परमेश्वर की आराधना में भेंट किया जाता था (निर्गमन 30:8, 34-38)। इसके और भी उपयोग थे, जैसे शव को लगाए जाने वाले मसाले का लेप, और धुआं करके और कुछ दवाइयों के आधार के रूप में। मुर्र एक धूप या गोंद था, जो बलसामोडेंड्रन (गुलमेहंदी) पेड़ से निकाला हो सकता है, यह भी अरब में होता था। यह गोंद एक सुगन्धित महक छोड़ती थी, जिसका इस्तेमाल कई बार बिस्तर को महकाने (नीतिवचन 7:17) या कपड़ों (भजन संहिता 45:8) के लिए होता था। यह कुछ किस्म की धूपों में पड़ता था और अभिषेक के तेल के रूप में इस्तेमाल किया जाता था (निर्गमन 30:23-25), इसके अलावा इसका इस्तेमाल शवों का अभिषेक करने के लिए किया जाता था (यूहन्ना 19:39, 40)। दाखरस के साथ मिलाने पर इसका इस्तेमाल बेहोश करने के लिए भी किया जाता था (मरकुस 15:23)। लुईस ने कहा कि आज चाहे मुर्र और लोबान महंगे नहीं हैं, पर मसीह के समय में यह बहुत महंगी चीज़ें थीं।[41]

आयत 12. बैतलहम से जाने से पहले **ज्योतिषियों** को परमेश्वर द्वारा यरूशलेम में **हेरोदेस के पास फिर न जाने की चेतावनी** दी गई थी, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि वे बालक का पता बताएं। जिस कारण वे **दूसरे मार्ग से होकर अपने देश को चले गए**। परमेश्वर आम तौर पर पुराने और नये दोनों नियमों में लोगों के साथ बातचीत के माध्यम के रूप में स्वप्नों का इस्तेमाल करता था।[42] कुछ लोग यह सिखाते हैं कि परमेश्वर आज भी स्वप्नों के द्वारा बातचीत करता है। पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने पवित्र आत्मा के बहाए जाने को योएल की भविष्यवाणी के पूरा होने के रूप में समझाया था: ''और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यवाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्पप्न देखेंगे'' (प्रेरितों 2:17; देखें योएल 2:28)। स्वप्नों के द्वारा बातचीत करना स्पष्टतया पहली सदी की कलीसिया के आश्चर्यकर्मों के युग का वैसे ही भाग था जैसे भविष्यवाणी और दर्शन थे। ये सभी यीशु मसीह का पूर्ण प्रकाशन दिए जाने पर बन्द हो गए (देखें 1 कुरिन्थियों 13:8-10)। आज परमेश्वर हमारे साथ केवल अपने पुत्र के द्वारा और केवल अपनी प्रेरणा से दिए गए वचन के द्वारा बात करता है (इब्रानियों 1:1, 2)।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

पण्डितों की मसीह की खोज (2:1-12)

मसीह की तलाश में पूर्व से आए पण्डित आज मसीह की तलाश करने वालों के साथ-साथ उसे और निकटता से मानने की इच्छा करने वालों के लिए एक बड़ा नमूना हैं।

उनकी खोज आसान नहीं थी (2:1)। उन पण्डितों के अरब से, बेबिलोन से या फारस से आने या की बात करें तो उनका सफ़र लम्बा था। वे यरूशलेम की ओर आते हुए उपजाऊ इलाके से घूमकर आए होंगे। मसीह के लिए अपनी तलाश में उन्होंने अपना समय, धन और ऊर्जा का बलिदान किया। आज यीशु की खोज करने वालों को मिलेगा कि वास्तविक शिष्य बनने के लिए

इससे कम से बात नहीं बन सकती (लूका 9:23)।

उनकी खोज के लिए दीनता आवश्यक थी (2:2)। यरूशलेम में पहुंचकर उन पण्डितों ने लोगों से पूछा कि नया जन्मा राजा कहां रहता है। आज यीशु की खोज करने वालों को भी दीन मन से अधिक ज्ञान रखने वालों से ऐसे प्रश्न पूछने आवश्यक हैं (देखें प्रेरितों 8:30, 31)।

उनकी खोज ने हलचल मचा दी (2:3)। पण्डितों द्वारा पूछे गए प्रश्न से राजा परेशान हो गया, जिसे एक प्रतिद्वंद्वी द्वारा अपने सिंहासन को खतरा लगा। इससे लोग भी परेशान हो गए जो हालात वैसे ही रहने देना चाहते थे, ताकि हेरोदेस कहीं कोई गड़बड़ न कर दे। इसी प्रकार, आज जब कोई यीशु की खोज करता है तो अपनी जीवन शैली से सन्तुष्ट दूसरे लोग कई बार परेशान हो जाते हैं। आखिर ज्योति का काम अंधेरे को छितराना ही होता है (इफिसियों 5:6-14)।

उनकी खोज पवित्र शास्त्र पर निर्भर थी (2:4-6)। पण्डितों के प्रश्न का उत्तर देने के लिए जो पूरे यरूशलेम में फैल चुका था, हेरोदेस ने यहूदी अगुओं से परामर्श लिया। उन्हें पवित्र शास्त्र से मालूम था कि मसीह का जन्म बैतलहम में होगा (मीका 5:2)। आज मसीह के पीछे चलने की इच्छा रखने वालों के लिए पवित्र शास्त्र से परामर्श लेना आवश्यक है जो उसकी गवाही देता है (देखें प्रेरितों 17:11)।

उनकी खोज किसी और खोज के साथ मिलाई गई (2:7, 8)। हेरोदेस ने उन पण्डितों को आदेश दिया कि मसीह से मिल लेने के बाद वे आकर उसे बताएं। ढोंग करते हुए उसने कहा कि वह भी नए जन्मे राजा को दण्डवत करना चाहता है। इसी प्रकार से आज भी कई ऐसे लोग हैं जिनकी मंशा यीशु की खोज के लिए शुद्ध नहीं है (देखें फिलिप्पियों 1:17)।

उनकी खोज से बड़ा आनन्द मिला (2:9, 10)। पण्डितों के यरूशलेम से बैतलहम की ओर जाने के समय तारा पहले उन्हें फिर से पूर्व में दिखाई दिया। यह जानकर कि वे उस स्थान के निकट आ रहे हैं जहां बालक को रखा गया था वे अति आनन्दित हुए थे। यीशु की खोज करने वाला व्यक्ति जब बपतिस्मे के पानी में परमेश्वर की सन्तान बन जाता है तो सचमुच उसके लिए बड़ा आनन्द का समय होता है (देखें प्रेरितों 8:35-39)। जीवन की विपत्तियों के बावजूद मसीही लोगों को प्रभु में आनन्दित रहने को कहा जाता है (फिलिप्पियों 4:4-7)।

उनकी खोज राजा को दण्डवत करने के साथ पूरी हुई (2:11, 12)। बैतलहम में घर में प्रवेश करने पर पण्डितों ने सबसे पहले भूमि पर झुककर यीशु को प्रणाम किया। फिर उन्होंने सोना मुर्र और लोबान के कीमती उपहार भेंट किए। आज अन्त में यीशु को खोज लेने वाले लोग मसीह की महिमा करते हुए जो वह है और जो उसने उनके लिए किया है अपने शेष जीवन बिता देंगे (देखें प्रकाशितवाक्य 5:8-14)।

डेविड स्टिवर्ट

यीशु को ढूंढ़ने की समझ (2:1, 2)

यीशु के जन्म के बाद से हर सदी में पण्डित यानी बुद्धिमान पुरुष व स्त्रियां उसकी खोज करते आए हैं। यदि हम में बुद्धि की कमी है, तो हमें उससे मांगनी चाहिए (7:7, 8; यहोशू 1:5-8)।

यीशु को ढूंढ़ने के लिए ईश्वरीय अगुआई की आवश्यकता है। वे पण्डित पवित्र शास्त्र और

तारे की अगुआई से आए थे जो उन्हें विशेष रूप से दिखाई दिया था। वे भ्रमित भावनाओं के द्वारा अर्थात अपनी ही समझ या मानवीय बुद्धि के द्वारा नहीं आए थे।

आज हमें भी ईश्वरीय अगुआई अर्थात परमेश्वर का वचन दिया गया है (भजन संहिता 119:105; यूहन्ना 17:17; प्रेरितों 20:32)। यह पूर्ण और पर्याप्त गाइड है (देखें 2 कुरिन्थियों 3:5, 6; 2 तीमुथियुस 3:16, 17) और हमें परमेश्वर की दृष्टि में पूरे होने के लिए पूरी तरह से इसे मानना होगा।

टिप्पणियां

[1]इस सम्बन्ध को बनाने की आवश्यकता यूहन्ना 7:40-44 में बहस से स्पष्ट होती है। कुछ यहूदियों का मानना था कि यीशु ''भविष्यवक्ता'' (मसीहा) था पर अन्यों ने इस तथ्य के आधार पर इस विचार को नकार दिया कि यीशु गलील से था। आपत्ति करने वालों का पवित्र शास्त्र से तर्क यह था कि मसीह बैतलहम से आएगा। [2]यूसबियुस *लाइफ़ ऑफ कांस्टेंटाइन* 3.41-43. [3]जस्टिन मार्टिर *डायलॉग विद ट्रायफो* 78; देखें ओरिजन *अगेंस्ट सेल्सस* 1.51. [4]जैक पी. लुईस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू सेंट मैथ्यू,* पार्ट 1, द लिविंग वर्ड कमैंटी (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 46. [5]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 14.9.2; 14.14.1-14.16.4. [6]आर. वी. जी. टॉस्कर, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू सेंट मैथ्यू,* टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज (गैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1975), 37. [7]लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (गैंड रैपिड्स, मिशगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 35, एन. 6. [8]हेरोदोतस *हिस्ट्री* 1.101, 132, 140. [9]वही, 1.101; 3.61-119, 126-141, 150-160. [10]टर्टुलियन *अगेंस्ट मार्सियन* 3.13.

[11]विलियम हैंड्रिक्सन, *न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री: एक्सपोज़िशन ऑफ़ द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू* (गैंड रैपिड्स, मिशगन: बेकर बुक हाउस, 1973), 152. [12]एच. लियो बोल्स, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1936), 37. [13]जस्टिन *डायलॉग विद ट्रायफो* 106. [14]क्लेमेंट ऑफ़ एलेक्जेंड्रिया *स्ट्रोमाटा* 1.15; क्रिसोस्टोम *होमिली ऑन द गॉस्पल अकार्डिंग टू सेंट मैथ्यू* 7.1. [15]पश्चिमी कलीसिया में ''एपीफेनी'' (6 जनवरी) का मनाया जाना चौथी शताब्दी तक जाता है। यह ''ज्योतिषियों के अन्यजातियों में मसीह के प्रदर्शन'' का स्मरण है (एलिजबेथ ए. लिविंगस्टोन, संपा., *द कन्साइज़ ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ऑफ़ द क्रिश्चियन चर्च* [न्यू यार्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 1977], 175)। [16]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू,* इंटरप्रिटेशन (लुईसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 13. [17]लूईस ने लिखा, ''प्रिसकिल्ला कब्रिस्तान के 'कैपेला ग्रेसा' में प्राचीनतम वर्णन में तीन दिखाए जाते हैं। पतरस और मॉर्सेलिनुस के कब्रिस्तान की एक बाद की पेंटिंग में दो लोग दिखाए जाते हैं'' (लूईस, 44)। [18]*एक्सरपर्ट लेटिना बारबरी* 51बी. [19]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 1-13,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33ए (डलास: वर्ड बुक्स, 1993), 27. [20]स्युटोनियस *वेस्पेसियन* 4.5; टैसिटुस *अनल्स* 5.13.

[21]लुईस, 44. [22]डब्ल्यू. एफ. अल्ब्राइट एंड सी. एस. मन, *मैथ्यू,* द एंकर बाइबल (गार्डन सिटी, न्यू यार्क: डबल्डे एंड कं., 1971), 12. [23]हैग्नर, 25-26. उसने सिकन्दर महान, मिथरिडेट्स और सिकन्दर सिवरुस के उदाहरण दिए। (देखें सिसेरो *ऑन डिवाइनेशन* 1.23.47; जस्टिन *हिस्ट्री* 37.2; लैम्प्रिडयूस *एलेक्जेंडर सेवरस* 12; ओरिगन *अगेंस्ट सेल्सस* 1.59.) [24]*डमेस्क्स रूल* 7.19, 20; *वार रूल* 11.6; *टैस्टामैंट ऑफ़ लेवी* 18.3; *टैस्टामैंट ऑफ़ जूडाह* 24.1. 132-135 ईस्वी के यहूदियों के विद्रोह में, बार कोस्बा (शायद ''छोटे राम का पुत्र'') ने अपना नाम बदलकर बारको बा (''तारे का पुत्र'') रख लिया। [25]जस्टिन *डायलॉग विद ट्रायफो* 106; इरनियुस *अगेंस्ट हेयरसिस* 3.9.2; ओरिगन *अगेंस्ट सेल्सस* 1.58-59. देखें 2 पतरस 1:19; प्रकाशितवाक्य 22:16. [26]कोलिन हम्फ्रेस ''द स्टार ऑफ़ बेतलहम,'' *साइंस एंड क्रिश्चियन बिलीफ़* 5 (अक्टूबर 1995): 83-101. [27]विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ मैथ्यू,* अंक 1, 2रा संस्क., द डेली स्टडी बाइबल (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1958), 17. [28]जॉन मैकआर्थर, जूनि., *द मैकआर्थर न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री: मैथ्यू 1-7* (शिकागो: मूडी प्रैस, 1985), 29. [29]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. और संपा. फ्रैडरिक डब्ल्यू. डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 882. [30]मैकआर्थर, 31.

[31]मौरिस, 37. [32]हेग्नर, 28. [33]लुईस, 45; देखें जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 20.10.1. [34]जोकिम जिर्मियास, *यरूशलेम इन द टाइम ऑफ़ जीज़स,* अनु. एफ़. एच. एंड सी. एच. केव (फिलाडेल्फिया: फोर्टरेस प्रैस, 1969), 180. [35]रॉबर्ट एच. गुंड्री, *मैथ्यू: ए कमैंट्री ऑन हिज़* लिटरेरी एंड थियोलॉजिकल आर्ट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 29. [36]आर. टी. फ्रांस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 83. [37]बार्कले, 21. [38]फ्रांस, 84. [39]हैड्रिक्सन, 170. [40]लुईस, 47.

[41]वही, 48. [42]देखें उत्पत्ति 20:3–7; 28:10–17; 31:10–13, 24; 37:5–11; 40:1–23; 41:1–36; न्यायियों 7:13–15; अय्यूब 33:14–16; दानिय्येल 2; 7; मत्ती 1:20, 21; 2:13–15, 22, 23; 27:19.